अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित्।।१२।।

अनिष्टम्=नरकदुःख; **इष्टम्**=स्वर्गसुख; **मिश्रम्**=मिला हुआ; **च**=अथवा; **त्रिविधम्**=तीन प्रकार का; **कर्मणः फलम्**=कर्मफल; **भवति**=होता है; **अत्यागिनाम्**=कर्मफल का त्याग करने वाले मनुष्यों को; **प्रेत्य**=मरने पर; **न**=नहीं; **तु**=परन्तु; **संन्यासिनाम्**=त्यागियों का; **क्वचित्**=कभी।

अनुवाद

कर्मफल का त्याग न करने वाले मनुष्यों को ही मरने पर सुख, दुःख और मिला हुआ, ऐसा तीन प्रकार का कर्मफल होता है। परन्तु कर्मफल के त्यागी पुरुषों को कभी ऐसा दुःख-सुख नहीं भोगना पड़ता ।।१२।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित सात्त्विक पुरुष अपनी देह को कष्ट देने वाले प्राणी-पदार्थ तक से द्वेष नहीं करता। वह यथायोग्य देशकाल में कर्तव्य-कर्म का दृढ़तापूर्वक आचरण करता है; परिणाम में होने वाले कष्टमय फल का भय नहीं करता। ऐसा ब्रह्मभूत पुरुष निःसन्देह परम् ज्ञानी है और अपने कर्मों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सन्देहों से छूटा हुआ है।

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्।।१३।।
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्।।१४।।

पञ्च=पाँच; **एतानि**=ये सब; **महाबाहो**=हे अर्जुन; **कारणानि**=कारण हैं; **निबोध**=जान; **मे**=मुझे से; **सांख्ये**=वेदान्तशास्त्र में; **कृतान्ते**=कर्म के अन्त में; **प्रोक्तानि**=कहे गए हैं; **सिद्धये**=सिद्धि के लिए; **सर्वकर्मणाम्**=सब कर्मों की; **अधिष्ठानम्**=आधार (शरीर); **तथा**=और; **कर्ता**=करने वाला (जीव); **करणम्** =करण (इन्द्रियाँ); **च**=और; **पृथग्विधम्**=अनेक प्रकार के; **विविधाः**=नाना प्रकार की; **च**=तथा; **पृथक्**=अलग-अलग; **चेष्टाः**=व्यापार; **दैवम्**=प्रेरक अन्तर्यामी; **च**=तथा; **एव**=निःसन्देह; **अत्र**=यहाँ; **पञ्चमम्**=पाँचवाँ।

अनुवाद

हे महाबाहु अर्जुन! सब कर्मों की पूर्ति के पाँच कारण हैं, इन्हें मुझ से जान। साख्यदर्शन में इन्हें कर्म का अधिष्ठान, कर्ता, इन्द्रियरूप करण, चेष्टा और परमात्मा कहा गया है।।१३-१४।।

तात्पर्य

जिज्ञासा उठ सकती है कि जब प्रत्येक कर्म का कुछ न कुछ फल अवश्य होता है, तब यह कैसे सम्भव है कि कृष्णभावनाभावित पुरुष को कर्मफल जनित दुःख-सुख